कोविड 19 परिवर्तित मानव व्यवहार व नैतिक दायित्व

डॉ. रश्मि दुबे
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को अपने गिरफ्त में ले लिया है विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना को वैश्विक महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस से हम सब प्रभावित है इस वायरस ने न केवल हमें शारीरिक रूप से संक्रमित किया है बल्कि हमारी मानसिकता, हमारी सोच हमारे व्यवहार को भी बदल कर रख दिया है । हम इतने भयभीत हो गये हैं कि एक दूसरे को बायोलाजिकल बम के रूप में देखना शुरू कर दिया है कोरोना का भय हमारी मानवीयता व मनुष्यता को हरा रहा हैं। हम अपनों की मदद के लिये साक्षात रूप से उपस्थित नहीं हो पा रहे हैं। इस भय से मोबाइल, ट्विटर, संदेश आडियो लिंक आदि के माध्यम से हम अपनी बात अपनों तक पहुंचा रहे हैं। कोविड 19 के भय के कारण हम अपने जीवन के सभी मूल्य, मित्रता, स्नेह संबंध सब भूलने लगे है। भय के कारण हमारा व्यवहार असंतुलित व अमानवीय कब हो जाता है हमको इसका पता ही नहीं चलता ।

हम सबने देखा कि जब प्रवासी मजदूर लौट रहे थे तो किस तरह उन्हें केमिकल स्प्रे किया जा रहा था वो केमिकल जो हार्डसर्फेस, हेंडिल बोर्ड के लिये होता है यह अमानवीयता नहीं तो और क्या है । मेरा सोचना है कि कोविड 19 हमें सिजोफ्रेनिक किस्म के भय संसार में डालता जा रहा है जिसमें हम दूसरों को देखकर चौंक जाते हैं और भयभीत हो जाते हैं। किस तरह मानवता को शर्मसार करती हुई क्लिप हमें दिखाई गई लोगों को चैनल में बंद किया गया जानवरों की तरह फेंक कर खाना दिया गया । मानवता को इस तरह मरते हुये देखा है सिर्फ और सिर्फ अपनी देह सुरक्षा के लिये मनुष्य कुछ भी अमानवीय कृत्य करने को तैयार है ।

निम्न उदाहरणों के द्वारा यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है -

उदा. 1 - मध्यप्रदेश के शिवपुरी निवासी दीपक शर्मा पेट्रोलियम इंजीनियर वो कोरोना संक्रमण से मुक्त होकर लौट तो आये लेकिन पड़ोसियों का व्यवहार इतना खराब है कि वह अपना घर बेचकर शहर छोड़ना चाहता है। उन्होंने घर के आगे बोर्ड लगा दिया यह घर बिकाऊ है ।

उदा. 2 - अपने को सुरक्षित रखने के लिये महानगर में नौकरी कर रहे अपने ही बच्चे को घर पर आने पर बंदिश लगाना तथा उसे महामारी से अकेले निपटने के लिये छोड़ देना ।

उदा. 3 - पुत्र के द्वारा अपने पिता की अर्थी को हाथ न लगाना ।

ISSN 2395-(

उदा. 4 - 18 मार्च 2020 को ट्रेन से कुछ लोगों को इसलिये उतार दिया गया कि उनके हाथ में क्वारेन्टाइन की लगी थी ।

उदा. 5 - कहीं बेटे बहू के आने पर दरवाजे बंद कर दिये गये तो कहीं बूढ़े मां बाप को घर आने से रोका

उदा. 6 - जिस नौकर ने पूरा जीवन आपके परिवार को बनाने व सम्भालने में मदद की उसे कोरोना के भय से से निकाल देना ।

उदा. 7 - दूध वाले से यह कहकर दूध बंद कर देना कि यदि किसी कोराना संक्रमित व्यक्ति के दूध दोगें तो हम दूध नहीं लेंगे ।

उदा. 8 - कोलकाता के पटुली क्षेत्र में पति के कोरोना संक्रमित होने पर गर्भवति पत्नि व बेटे की पिटाई।

उक्त उदाहरण पर यदि हम गौर करें तो पायेंगे कि हम भय के कारण बीमारी से नहीं बीमार से ल हैं। कोरोना का संकट मनुष्य से अधिक मनुष्यता पर है। आज मानव जाति को चारों ओर से भय ने जकड़ है और यह सत्य है कि भय हमारी सोचने समझने की शक्ति को कमजोर कर देता है। कोरोना ने मनुष्य और के बीच संदेह की दीवार खड़ी की है किस मित्र किस परिजन किस रक्त संबंधी के रूप में कोरोना का आक्रमण यह भय पहले से ही कमजोर पड़ चुकी पारिवारिक समाजिक व्यवस्था पर आघात प्रतीक हो रहा है। कोरोना भययुक्त अश्पृश्यता है वह जाति भेद रंग भेद और प्रजातीय नफरत से भी भयानक है क्योंकि इसका विस्तार के स्पर्श, गंध और हर उस प्रक्रिया से है जो समीपता और निकटता से मनुष्य को राहत प्रदान करती है। अब र के सामने कोविड 19 के कारण मनुष्य के असामान्य व्यवहार की समस्या एक चिंता का कारण बनती जा रह जो कोविड 19 को खिलाफ लड़ रहे हैं या जिन्हें कोविड हो गया है । हम सोचते हैं हम उनसे दूर रहकर बच ज पर हमें ये समझना होगा कि लोगों से भेदभाव करके लोगों को दोषी बताकर हम इस जंग को नही जीत सकते समाज में इस तरह संक्रमण फैल चुका है तो हमारा नैतिक दायित्व की भी बात आती है ।

हमें इस बात को पहले अपने आप से स्वीकारना होगी कि "हमें बीमारी से लड़ना है बीमार से नहीं" तथ्य को स्वीकार करना पड़ेगा अपनाना पड़ेगा । पर आज मानव जाति इतनी भयभीत हो गई है कि भय के व उसके सोचने समझने की शक्ति कमजोर हो गई है। बारुद के गोले से मानव नहीं घबराया भूकंप और बाढ़ भी म को आहत नहीं कर पाये पर कोरोना के भय से मानव व्यवहार असामान्य होता नजर आ रहा है। चिकित्सक विशेषज्ञ लगातार सलाह दे रहे हैं कि कोरोना से ठीक होने वाले व्यक्ति से सामान्य व्यवहार किया जाये यदि स व्यक्ति पर मानव व्यवहार का बुरा प्रभाव पड़ता है तो वह फिर बीमार हो जाता है । संक्रमित या संक्रमण से होने वाले व्यक्ति से दुर्व्यवहार करने पर वह पुनः बीमार हो जाता है । इसलिये संक्रमित व्यक्ति से आप सामा दूरी बनाइये पर भेदभाव उचित नहीं है ।

इस स्थिति में हमारी स्वयं की जिम्मेदारी व नैतिक कर्तव्य क्या होना चाहिये जैसे यदि कोई संक्रमित है और दूसरों को अपने संपर्क से आने से नहीं रोक पाता या स्वस्थ व्यक्ति अपनी स्वयं की सुरक्षा नहीं कर पाता तो ऐसे सभी लोग इस महामारी के लिये जिम्मेदार होंगे । संक्रमण को नियंत्रित करने में पूरे समाज का मानव व्यवहार महत्वपूर्ण होता है।

हमारा कर्तव्य व दायित्व है कि संक्रमित व्यक्ति या उसके परिवार के साथ शारीरिक दूरी का पालन करते हुये हम उसे सहयोग करें, उसके अच्छे स्वास्थ्य लाभ की कामना करें।

उसे दिलासा दे समझायें कि कैसे संक्रमित व्यक्ति या उसका परिवार इस बीमारी से जल्दि ठीक हो सकता है, संक्रमित व्यक्ति से भावनात्मक रूप से जुड़े। उसे फोन मीडिया टविट्र फेसबुक आदि के माध्यम से समझाने का प्रयास करें। उनके साथ संतुलित व्यवहार करें। अब हमारा यह प्रयास होना चाहिये कि समाज में भय के कारण उपजी अमानवीयता को नियंत्रित किया जाये। ऐसी जन जाग्रति का प्रचार करना हेागा कि मानव मन में पुनः परम्परा संवेदना, मूल्य सामूहिक संवाद परहित के भाव उत्पन्न हो सकें तथा हम पुनः अपनी जिंदगी को निर्भीकिता से जी सकें। इस महामारी से समाज को मुक्त कराने में दवाइयां व वैक्सिन के अलावा संतुलित मानव व्यवहार की अहम भूमिका होगी। महामारी के खिलाफ लड़ाई "जीवन की लड़ाई" है और लोगों को मरीजों का साथ देना चाहिये और जल्दी स्वस्थ होने में उनकी मदद करनी चाहिये।

(यह लेख लेखिका के मौलिक विचारों पर आधारित है)